>

Title: Need to constitute task force for providing water in drought prone areas of Bihar.

डॉ. भोला सिंह (नवादा): धन्यवाद सभापति महोदय। लोक सभा खुदा की इबादत है पर यह उस खुदा की इबादत नहीं है या उस ईश्वर की आराधना नहीं है जो मस्जिदों अथवा मंदिरों में रहता है। यह उस खुदा की इबादत है जो लाखों-करोड़ों की संख्या में अपना शरीर और आत्मा लिए हुए सोते-जागते, भूखे-प्यासे, अँधेरे में, प्रकाश में, गम में, खुशी में रहता है और सच पूछिये, इसी खुदा की बदौलत मंदिरों और मस्जिदों में शुद्धापूरित आत्माएँ जीवित हैं, उनकी भोग क्रिया भी जीवित है, उनका स्तुति गान भी जीवन्त है। परंतु खेद के साथ कहना पड़ता है कि मंदिरों, मस्जिदों में रहने वाली आत्माएँ जिनसे जीवंत हैं, वे स्वयं सुखाड़ से मर्माहत हैं।

मगध प्रमंडल के गया, औरंगाबाद, नवादा, जहानाबाद, अरवल एवं मुंगेर प्रमंडल के जमुई, शेखपुरा, बांका, लखीसराय तथा भोजपुर के आरा, रोहतास, भभुवा आदि पठारी हिस्सों में रहने वाली करोड़ों की आबादी पेयजल, सिंचाई और अपनी पैदावार के रखरखाव के लिए प्रताड़ित, उपेक्षित है और उनकी आर्तनाद अनसुनी है। बिहार सरकार उनकी पीड़ा को सुनकर भी अपेक्षित योजनाओं का कार्यान्वयन निधि के अभाव में सुचारू रूप से नहीं कर पा रही है। बिहार में 67 लाख टन धान की पैदावार हुई है और गेहूँ की पैदावार भी बम्पर हुई, पर इनके रख-रखाव और बोरियों का प्रबंध नहीं होने के कारण हज़ारों करोड़ रुपये का अनाज सड़ जाने की स्थिति में है। ...(व्यवधान) बिहार अपनी अस्मिता के लिए संघर्षरत है और केन्द्र सरकार का यह कर्तव्य है कि बिहार के विकास में भारत के विकास को देखने की प्रवृत्ति अपनाए। मैं सदन के माध्यम से केन्द्र का ध्यान आकृष्ट करता हूँ कि वह गया, मुंगेर, भोजपुर प्रमंडलों में जो व्याप्त सुखाड़ उपस्थित है, उसमें बड़े पैमाने पर टास्क फोर्स का गठन कर आहर, पईन, ताल-तलैया, पहाड़ी चापाकल आदि का योजनाबद्ध तरीके से प्रबंधन करे ताकि हम लाखों करोड़ों देवताओं की इस सेवा से उनकी आराधना कर सकें।